Saathi

Date __/__/____

संसाधन की अवधारणा

जिम्मरमैन के अनुसार- संसाधन निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ती के साधन है और ये उद्देश्य व्यक्ति की आवश्यकताओं की पुर्ती एवं सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ती होते है। दुसरे शब्दो मे संसाधन मानवीय आवश्यकताओ की पुर्ती करते है अतः ये एक उपयोगी तत्व है। तथा इनका एक एक गुण उपयोगिता है। जल, वायु, सुर्य, भूमि वन कोयला मशीन आदि उपयोगी वस्तुएं है।
कोई भी वस्तुएं संसाधन तभी होती है। अर्थात तभी भी वस्तु मानव के सन्दर्भ मे अपने कार्यो द्वारा संसाधन हो जाती है। कोयले का एक टुकड़ा अपनी प्रकृति रंग अथवा संगठन के कारण या अपनी कमी के कारण संसाधन नहीं होता है

संसाधन से अभिप्राय-
संसाधन प्रकृतिप्रदत्त जैव अजैव तत्व जिन्हे मानव अपनी बुद्धि श्रम तकनीकी कौशल प्रयोग एवं अनुभवो द्वारा अपनी आवश्यकता की अनुरूप संशोधन परिवर्द्धन तथा परिष्कृत कर तथा अधिक उपयोगी बनाकर उसके गुण आर्थमूल्यन मे वृद्धि करता है। प्रकृतिक संसाधन कहलाते है।

संसाधन के आवश्यक गुण- संसाधन के लिए किसी वस्तु मे दो गुणो का होना आवश्यक है।
(1) उपयोगिता - (2) कार्यात्मक या कार्य करने की योग्यता एवं क्षमता

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/____

अतः किसी भी प्राकृतिक तत्व को संसाधन कहलाते है
(अ) सहज सुलभ हो (ब) मनुष्य उसे जानता हो
(स) उसका प्रयोग करता हो (द) पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध
इसलिए जिम्मरमैन ने कहा है। कि- प्राकृतिक संसाधन होते नही है। वे बन जाते है। इसी प्रकार येट्स- ने कहा कि - संसाधनो को जो आप बनाते है। वही बन जाते है। अर्थात् मनुष्य का ज्ञान ही सबसे बड़ा संसाधन है

संसाधन की परिभाषा

समाज विज्ञान कोश के अनुसार - संसाधन मानवीय पर्यावरण के वे पक्ष है। जिनके द्वारा मनुष्य की आवश्यकता की पुर्ति मे सुविधा होती है।

जिम्मरमैन के अनुसार - संसाधन पर्यावरण की वे विशेषताएं है। जो मनुष्य की आवश्यकताओ की पुर्ति मे सक्षम मानी जाती है। एक अन्य परिभाषा के अनुसार संसाधन मानव द्वारा आकलित तथा अरोपा किया हुआ किसी वस्तु या पदार्थ का वह गुण या क्षमता एवं कार्य है। जो मानव की परिसम्पति बन जाते है। वे संसाधन कहलाते है। कोई भी वस्तु पदार्थ या तत्व उसी दशा मे संसाधन होता है।

संसाधनो का विकास - आज अफ्रीका एवं एशिया दक्षिणी अमेरिका के अधिकांश देश भारत का छोटा नागपुर का पठार बस्तर आदि प्राकृतिक सम्पदा मे परिपूर्ण होते हुए भी अज्ञानता के कारण सांस्कृतिक

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Page No.

विकास एवं तकनीकी ज्ञान के अभाव मे अपना आर्थिक एवं सामाजिक विकास नही कर पाते है उसे प्राचीन काल मे मानव भूतल पर सभी प्रकार के संसाधन उपलब्ध होते हुऐ भी उपयोग नही कर सका उसी प्रकार मध्य पूर्व मे तेल सदा विद्यमान थी लेकिन यहाँ के लोग इसे जानते नही थे प्राचीन समय मे उत्तरी अमेरिका मे भी खनीज के अकल भण्डार थे परन्तु वहा के रेड इण्डियन को भी जानकारी नही थी और संसाधन के रूप मे उनका मुल्य घटता बढ़ता रहता है जब बाहरी लोग (यूरोपीय) ने जाकर इन सम्पदाओ की अपनी कुशलता बुद्धि एवं संस्कृति के आधार का पता लगाया और उत्पादन किया तो वहाँ के लोगो की महत्वपूर्ण संसाधन एवं अर्थ व्यवस्था के अंग बन गये प्राकृतिक पदार्थो के संसाधन के रूप मे प्रस्तुत करने के लिए अग्रलिखित दशाएं या स्थितियाँ होती है — (1) पदार्थो की उपलब्धी (2) पदार्थो के प्रयोग का ज्ञान (3) पदार्थो का वैकल्पिक तथा बहु प्रयोग (4) तकनीकी (प्रौद्योगिकी) का विकास (5) पुंजी की उपलब्धी (6) राजनीतिक संरक्षण तथा (7) व्यापार की वृद्धि —

संसाधन का वर्गीकरण

ये वर्गीकरण चार आधारो पर किये जाते है —

(1) अधिकार क्षेत्र के आधार पर

इस आधार पर संसाधन के तीन वर्ग है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/____

(i) व्यक्तिगत संसाधन - इसके अन्तर्गत भूमि एवं मकान आते हैं। जिन भौतिक पदार्थों पर व्यक्तिगत स्वामित्व होता है

(ii) राष्ट्रीय संसाधन - व्यक्तिगत संसाधनों का कुल योग देश का राष्ट्रीय संसाधन कहा जाता है। इसमें सार्वजनिक सम्पत्तियाँ होती हैं।
जैसे- खनिज - पर्वत - नदी - आदि

(iii) विश्व संसाधन - विश्व के सभी भौतिक या अभौतिक पदार्थ जो मानव कल्याण में सहयोग देते हैं, उसे विश्व संसाधन कहलाते हैं।

सुलभता के आधार पर -

(i) सर्वसुलभ संसाधन - जो पदार्थ भूमण्डल पर सर्वत्र होते हैं। जैसे- वायु

(ii) सामान्य सुलभ संसाधन - ऐसे पदार्थ जो भूमण्डल पर अधिक क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं।
जैसे- मिट्टी - जल - घास

(iii) विरल संसाधन - जो पदार्थ भूमण्डल पर कहीं कहीं पाये जाते हैं
जैसे - कोयला - तेल - लोहा - अपरक

(iv) एकल संसाधन - ऐसे पदार्थ जो भूमण्डल पर कम स्थानों पर पाये जाते हैं
जैसे - क्रियोलाइट -

उपयोग के आधार पर -

(i) अप्रयुक्त संसाधन - ये प्रयोग में नहीं लाये गये संसाधन होते हैं।

(ii) अप्रयोजनीय संसाधन - जो पदार्थ अभी उपयोग में लाने योग्य नहीं हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date ___/___/___

(iii) विभव संसाधन – निकट भविष्य मे उपयोग मे आ सकने वाले पदार्थ होते है।

गुप्त संसाधन – जो पदार्थ उपयोग मे नही आ रहे है

नवीकरणीयता के आधार पर –

(i) दीर्घ प्रयोजनीय परिवर्द्धनीय एवं परिमार्जनीय संसाधन – बहुत से पदार्थ सावधानीपूर्वक उपयोग होने पर दीर्घ अवधि तक उपयोग रह जाते है।

जैसे – कृषि योग्य भूमि – जल – वन

(ii) अपरिवर्द्धनीय अपरिमार्जनीय एवं अक्षयी संसाधन

ये संसाधन निश्चित मात्रा मे होने के उपयोग होने के साथ समाप्त हो जाते है इसके गुणो मे वृद्धि सम्भव नही है।

(iii) अपरिवर्द्धनीय अक्षय एवं सनातन संसाधन –

ये संसाधन निश्चित मात्रा मे होने के ये पदार्थ अविनाशी कहलाते है जिनको मानव नष्ट या परिवर्तित नही कर सकता है

जैसे – जलवायु प्रकाश। जिन पदार्थो को मानव ~~नही~~ नष्ट कर सकता है वे विनाशशील है

जैसे – उच्चावच –

नवीनीकरण तथा अनवीनीकरण संसाधन

(अ) नवीनीकरणीय संसाधन –

नवीनीकरणीय संसाधन जीवित (याजैव) संसाधन है जैव संसाधन पुनरुत्पन्न या स्वयं के पुन! स्थापन मे सक्षम होते है। इनका निर्माण निरन्तर होता रहता है इनकी मात्रा मे वृद्धि होती रहती –

उदाहरण – के लिए प्रजननरत जैव संसाधन उचित देख रेख पुनः उपयोग की सामग्री प्रदान करने लगते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/__

मानव की अधारभूत अवश्यकताएँ

आर्थिक भूगोल का विषय क्षेत्र उतना ही व्यापक है जितना की मनुष्य के आर्थिक क्रियाओ की विस्तार है। जिनसे विविध वस्तुओ के मुल्य या स्वरूप मे वृद्धि होती है। वस्तुओ के मुल्य मे वृद्धि उनके रुप परिवर्तन स्थान परिवर्तन और अधिकार परिवर्तन से होती है।

मनुष्य की तीन अधार भूत शारीरिक अथवा जैविक आवश्यकताएँ मानी गयी है। जिनके अभाव मे उसका जीवन दुष्कर हो जाता है। वायु और जल के अतिरिक्त ये तीन अनिवार्य अवश्यकताये है। भोजन – वस्त्र और आश्रय

मानव की अधारभूत आवश्यकताएँ

भोजन	वस्त्र	आश्रय
शरीर की शक्ति बनाये रखने उसक पोषण वृद्धि एवं स्फूर्ति प्राप्ति के लिए	जलवायु सम्बधी विषम परिस्थितियो से शरीर की रक्षा के लिए	शरीर की रक्षा विश्राम निद्रा तथा शत्रुओ के आक्रमण से सुरक्षा के लिए

इन अवश्यकताओ की पुर्ति के लिए मानव को स्वयं के या दूसरो के श्रम पर निर्भर रहना पड़ता है। ये वस्तुएँ या तो स्वत: ही पृथ्वी के धरातल पर अथवा भूगर्भ मे पायी जाती है। इन्हे निकालकर या उनका परिवर्तन संशोधन अथवा परिष्कृतीकरण करके मानव उपयोग के लिए तैयार की जाती है।

जैसे – रोटी बनाने के लिए गेहूँ का उपयोग किया जाता है। कृषि द्वारा गेहूँ उत्पन्न किया जाता है।

प्राचार्य
... मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
...पुर, ...खा, बलिया

Saathi

Date __/__/__

से उपयोग हेतु बनाने के लिए आटे में परिवर्तित किया जाता है। फर्नीचर का निर्माण वनों से प्राप्त होने वाली लकड़ियों से तथा उनी वस्त्रों के लिए ऊन भेड़ों से और औजारों के लिए कच्चे लोहे का उपयोग किया जाता है।

मानव के व्यवसायों का वर्गीकरण

(I) प्राथमिक उत्पादन सम्बन्धी व्यवसाय
(II) गौण उत्पादन सम्बन्धी व्यवसाय
(III) तृतीय उत्पादन सम्बन्धी व्यवसाय

(I) प्राथमिक उत्पादन सम्बन्धी व्यवसाय –

प्राथमिक अथवा प्रारम्भिक व्यवसाय के व्यवसाय हैं। जिनके द्वारा मानव प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग करता है। कृषि कार्य में मिट्टी का प्रत्यक्ष उपयोग फसल उगाने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार जल क्षेत्रों में मछली पकड़ना खानों से खनिज निकालना – वनों में लकड़ियां काटना फल एकत्रित करना पशुओं से ऊन चमड़ा वाल खालें हड्डियाँ आदि प्राप्त करना प्राथमिक उत्पादन व्यवसाय है।

प्राथमिक व्यवसाय कहा जाता है।

जैसे – कृषि करना खाने खोदना मछली पकड़ना आखेट करना वस्तुओं का संचय करना

गौण उत्पादन सम्बन्धी व्यवसाय –

इन व्यवसायों के अन्तर्गत प्रकृतिक संसाधनों का प्रत्यक्ष उपयोग नहीं किया जाता वरन् उनको साफ अथवा रूप परिवर्तित कर उपयोग के योग्य बनाया जाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Page No.

Saathi

Date __/__/__

इससे मूल्य मे वृद्धि हो जाती है।
जैसे- लोहे को गलाकर इस्पात के यन्त्र अथवा अन्य वस्तुओं का निर्माण करना गेहूँ से आटा अथवा मैदा तैयार करना कपास अथवा ऊन अथवा रेशम से कपड़ा तैयार करना लकड़ी से फर्नीचर बनाना कागज बनाना आदि इन वस्तुओं को तैयार करने वाले उद्योगो के गौण व्यवसाय कहा जाता है। इनके अन्तर्गत सभी प्रकार के निर्माणी उद्योग सम्मिलित किए जाते है।

गौण व्यवसायो की विशेषताएँ

(i) इस प्रकार के व्यवसायो के कच्चा माल प्राथमिक उद्योगो द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। अत: यह क्रिया प्राथमिक व्यवसाय से सम्बन्धित है।
(ii) इन कच्चे माल को परिष्कृत संशोधित करने के लिए शक्ति का उपयोग किया जाता है।
(iii) मानव क्रिया तथा उसके मस्तिष्क का उपयोग उससे विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की निर्माण के लिए किया जाता है
(iv) गौण उत्पादन व्यवसायो के लिए आवश्यक पूँजी की भी आवश्यकता होती है। साथ ही बड़े बड़े कारखाने तथा मनुष्यों के रूप मे श्रमिकों की भी आवश्यकता होती

तृतीय उत्पादन सम्बन्धी व्यवसाय —
इस प्रकार के व्यवसायो के अन्तर्गत वे सभी व्यवसाय सम्मिलित किये जाते है। जो प्राथमिक अथवा गौण उत्पादन की वस्तुओ की उपभोक्ता उद्योगपतियों तक पहुँचाने से सम्बन्धित होते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया